आरएनआई नं. : RAJHIN/2014/59353
डाक पंजी सं. : RJ/UD/29-154/2021-2023

दैनिक समाचार–पत्र

प्रेषण :- कार्यालय चेतक सर्कल पोस्ट ऑफिस ,उदयपुर
प्रेषण दिनांक:-प्रतिदिन

मन के जीते जीत सदा

• वर्ष - 10 • अंक-2723 • उदयपुर, गुरुवार 09 जून, 2022 • प्रेषण दिनांक : प्रतिदिन • कुल पृष्ठ : 4 • मूल्य : 1 रुपया

आपका अपना नारायण सेवा संस्थान, उदयपुर

शेगांव जिला बुलढ़ाणा (महाराष्ट्र) में नारायण सेवा

नारायण सेवा संस्थान का ध्येय है कि दिव्यांग भी दौड़ेगा–अपनी लाठी छोड़ेगा। इस क्रम में संस्थान की शाखाओं व दानदाताओं के सहयोग से दिव्यांग जाँच, उनका ऑपरेशन के लिये चयन तथा कृत्रिम अंगों का माप लेना व अंग लगाने का कार्य गति पर है। ऐसा ही एक और विशाल निःशुल्क दिव्यांग जाँच, उपकरण वितरण तथा कृत्रिम अंग माप शिविर 29 व 30 मई 2022 को माहेश्वरी भवन, शेगांव में हुआ। शिविर सहयोगकर्ता रोटरी क्लब, भोगांव (महाराष्ट्र) रहे। शिविर में कुल रजिस्ट्रेशन 171, कृत्रिम अंग वितरण माप 142, कैलीपर माप 29 की सेवा हुई।

उक्त शिविर में मुख्य अतिथि श्रीमान् ज्ञानेश्वर जी पाटील (माऊली संस्था, अध्यक्ष), विशिष्ट अतिथि श्रीमान् विजय जी यादव साहब (उद्योगपति), श्रीमान् नंदलाल जी मूंदड़ा (शाखा संयोजक शेगांव शाखा), श्रीमान् सी.ए. आशीश जी (रोटरी अध्यक्ष), श्रीमान् दिलीप जी भूतड़ा (प्रोजेक्ट मेनेजर, रोटरी), अध्यक्ष श्रीमान् रमेश जी काश्वानी (उद्योगपति) रहे।
नेहांशा जी मेहता (पी.एन.डो.), भंवरसिंह जी चौहान, लोकेन्द सिंह जी (टेक्निशियन) सहित शिविर टीम में मुकेश कुमार शर्मा (शिविर प्रभारी), सुनिल जी (उपप्रभारी), हरीश सिंह जी रावत, कपिल जी व्यास (सहायक) ने भी सेवायें दी।

ग्वालियर (मध्यप्रदेश) में दिव्यांग सेवा

नारायण सेवा संस्थान ने दिव्यांगता–मुक्ति का यज्ञ वर्षो से प्रारंभ किया है। इस प्रयास–सेवा से 4,50,000 से अधिक दिव्यांग भाई–बहिनों को सकलांग होने का हौसला मिला है। लाखों दिव्यांगों को कृत्रिम अंग लगाकर जीवन की मुख्यधारा से जोड़ा गया है। इस पुण्य कार्य को गति देने के लिये एक और विशाल निःशुल्क दिव्यांग जाँच, उपकरण वितरण तथा कृत्रिम अंग माप शिविर 17 मई को कैसर हॉस्पीटल आमखों, ग्वालियर में संपन्न हुआ। शिविर सहयोगकर्ता लांयस क्लब, ग्वालियर आस्था रहे। शिविर में कुल रजिस्ट्रेशन 169, कृत्रिम अंग माप 55, कैलिपर माप 20 की सेवा हुई तथा 06 का ऑपरेशन हेतु चयन किया गया।
उक्त शिविर में मुख्य अतिथि डॉ. बी.आर. जी श्रीवास्तव (कैंसर हॉस्पीटल, डायरेक्टर), अध्यक्षता श्रीमती रजनी जी अग्रवाल (अध्यक्ष, लांयस क्लब आस्था), विशिष्ट अतिथि श्री जगदीश शरण जी गुप्ता (रीजन चेयरपर्सन), श्रीमान् तालीब जी खान (जोन चेयरपर्सन), श्रीमान् रमेश जी श्रीवास्तव (गाइडिंग लायन)रहे।
डॉ. सिद्धार्थ जी लाम्बा (ऑर्थोपेडिक सर्जन), डॉ. रामनाथ जी ठाकुर (पी.एन.डो.), श्री किशन जी सुथार (टेक्निशियन) सहित शिविर टीम में श्री हरिप्रसाद जी (शिविर प्रभारी), श्री गोपाल जी गोस्वामी, श्री हरीश सिंह जी रावत (सहायक) ने भी सेवायें दी।

NARAYAN SEVA SANSTHAN
Our Religion is Humanity
विशाल निःशुल्क दिव्यांग जांच,
ऑपरेशन चयन एवं
कृत्रिम अंग (हाथ–पांव) माप शिविर
दिनांक : 12 जून, 2022
▪ माता बाला सुन्दरी प्रागंण, शहजादपुर, अम्बाला, हरियाणा
▪ श्री एसएस जैन संघ मार्केट, बल्लारी, कर्नाटक
इस दिव्यांग भाग्योदय शिविर में आपश्री सादर आमंत्रित है एवं अपने क्षेत्र में जो दिव्यांग भाई बहन है उन तक अधिक से अधिक सूचना देवें।

पू. कैलाश जी 'मानव'

'सेवक' प्रशान्त भैया

+91 7023509999
+91 2946622222
www.narayanseva.org | info@narayanseva.org

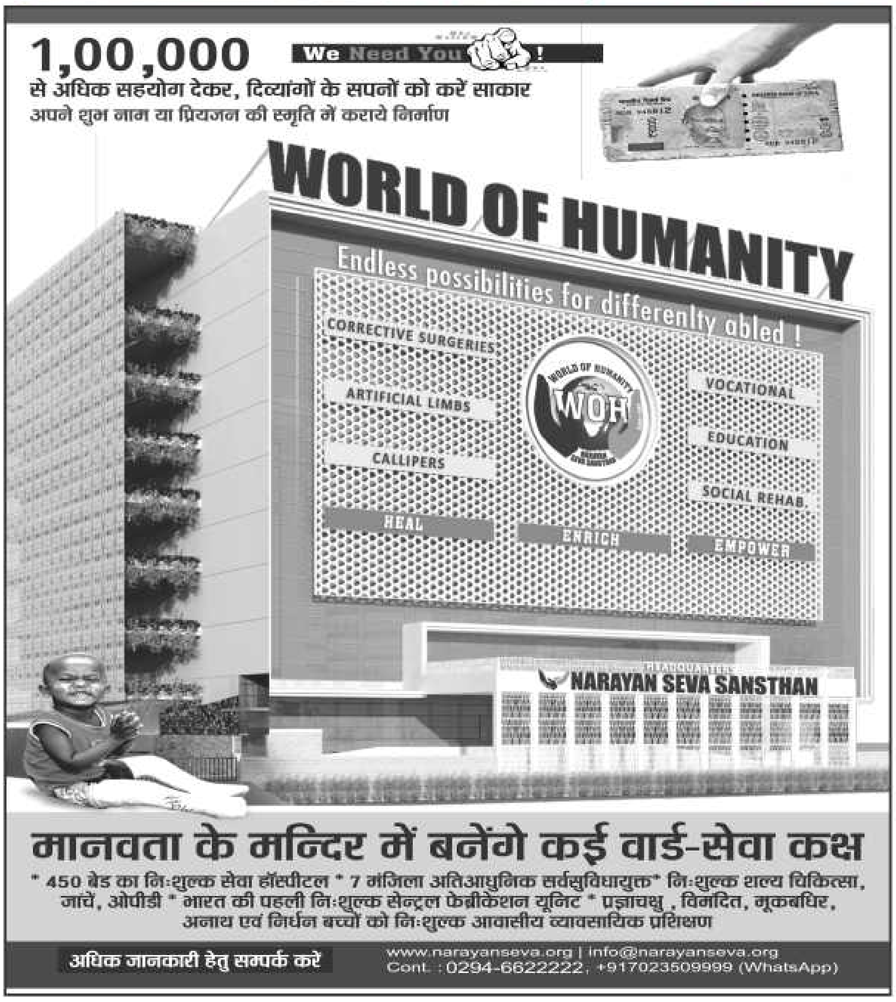

झूठा दिखावा

एक युवक की बड़ी कंपनी में नौकरी लगी। पहले दिन जब वह अपने केबिन में बैठा था, तभी एक साधारण से दिखने वाले व्यक्ति ने केबिन का दरवाजा खटखटाया। उसे देखकर युवक ने बाहर बैठकर आधा घंटे इंतजार करने को कहा। आधे घंटे बाद उस व्यक्ति ने पुनः केबिन के अंदर आने की इजाजत मांगी। युवक ने उसे अंदर बुला लिया और फोन पर बात करने लगा। वह फोन पर बात करते वक्त बड़ी–बड़ी डींगें हांकने लगा और अपने पैसे एवं ऐशो आराम की बातें करने लगा। वह व्यक्ति चुपचाप वहां खड़ा उसकी सारी बातें सुन रहा था। कुछ देर बाद युवक ने फोन रखा और उससे पूछा कि तुम यहां क्यों आए हो? उस व्यक्ति ने विनम्र भाव से देखते हुए कहा कि साहब, मैं यहां यह फोन ठीक करने आया हूं। मुझे खबर मिली है कि आप जिस फोन पर बात कर रहे थे, वह हफ्ते भर से खराब पड़ा है। इतना सुनते ही वह युवक शर्म से लाल हो गया और चुपचाप केबिन से बाहर चला गया। उसे समझ आ गया था कि बेकार में झूठा दिखावा करना अच्छा नहीं होता।

मन की शक्ति से बड़ी कोई शक्ति नहीं

एक दिन स्वामी विवेकानंद एक अंग्रेज मूलर के साथ टहल रहे थे। उसी समय एक पागल सांड तेजी से उनकी ओर बढ़ने लगा। अंग्रेज सज्जन भाग कर पहाड़ी के दूसरी छोर पर जा खड़े हुए। स्वामीजी ने उन्हें सहायता पहुंचाने का कोई और उपाय न देख खुद सांड के सामने खड़े हो गए। तब मिस्टर मूलर देखकर दंग रह गए।

जब स्वामी जी से मूलर ने पूछा कि आपको सांड के सामने डर नहीं लगा तब वह बोले उस समय उनका मन हिसाब करने में लगा हुआ था कि सांड उन्हें कितनी दूर फेंकेगा।

लेकिन कुछ देर बाद वह ठहर गया और पीछे हटने लगा। अपने कायरतापूर्ण पलायन पर . मूलर बड़े लज्जित हुए।

मिस्टर मूलर ने पूछा कि वे ऐसी खतरनाक स्थिति से सामना करने का साहस कैसे जुटा सके? स्वामीजी ने पत्थर के दो टुकड़े उठाकर उन्हें आपस में टकराते हुए कहा, खतरे और मृत्यु के समक्ष मैं स्वयं को चकमक पत्थर के समान सबल महसूस करता हूं, क्योंकि मैंने ईश्वर के चरण स्पर्श किये हैं।

यदि आप मन की शक्ति से किसी भी काम करने का निर्णय करेंगे तो संभव है उस समस्या को आप जल्द से जल्द हल कर सकते हैं। इसलिए कहा भी गया है कि मन की शक्ति से कोई बड़ी शक्ति नहीं है।

प्रसन्नता है प्रेम का झरना : कैलाश मानव

कहीं न कहीं हम खो रहे है बाबू। तो लाला नल और नील, भगवान ने कहा– सुग्रीव, अगंदजी, कपिपति हनुमानजी, रीछराज जामवन्तजी महाराज। आप सभी ये कौतुक करो, एक खेल करो, एक आनन्द करो। जिसको जो दिखे, शिला लाओ, पत्थर लाओ, चट्टान लाओ और नल–नील के हाथों स्प र्श करा के देते जाओ। और नल–नील यूं लेता था जैसे गेंद को ले रहा है। कितनी बड़ी चट्टान जैसे गेंद को लेकर के जयश्री राम, जयश्रीराम ऐसे कहकर समुद्र में स्पर्श करा देते थे। वो पत्थर समुद्र में तैरने लग जाते थे। बाबू, भाया ये कथा हम कर रहे है सुख और भाांति के लिये।

बोलिये श्रीरामचन्द्र भगवान की जय। नल महाराज की जय, नील महाराज की जय। तो नल और नील ऐसे उठा लेते थे जैसे गेंद को उठा रहे हैं और जयश्रीराम करके। आपने तो कई बार सुना होगा व्यासपीठ से हनुमानजी को भगवान ने कहा कि– हनुमान देखिये नल और नील जिन पत्थर को स्पर्श करते हैं वो तैर जाते हैं। लेकिन एक पत्थर भगवान ने अपने हाथ से डाला वो डूब गया। तो हनुमानजी महाराज बोले– जिनको छोड़ दोगे वो तो डूबेगा ही। आप जिनको छोड़ दोगे तरेगा कैसे ? आप हमें सम्भाले रखें।

मैं नहीं मेरा नहीं,
यह तन किसी का है दिया हुआ।
जो भी अपने पास है,
वह धन किसी का है दिया।।

गिनती क्यों करूं?

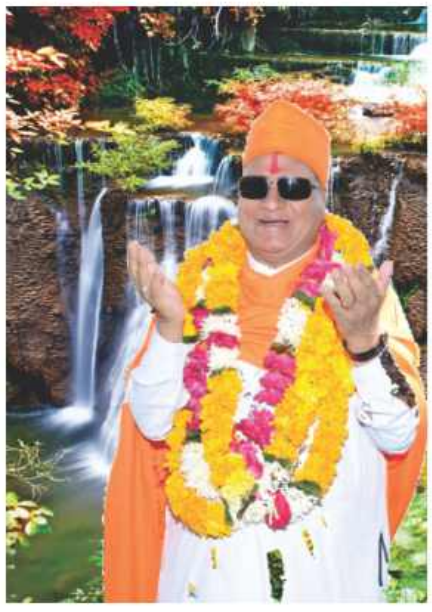

एक शहर में सत्संग भवन का निर्माण हो रहा था। भवन की सेवा चल रही थी। निर्माण कार्य का निरीक्षण करने पर एक महापुरुष वहां आये हुये थे। कुछ दिन रहने के बाद उनका वापसी का समय आ गया। उस महापुरुष ने सोचा कि सन्त को नमस्कार कर लूं। उसने अपनी जेब में हाथ डाला और जितनी भी माया उसके हाथ मे आई उसने नमस्कार कर दे दी। महापुरुष ने कहा कि आप नमस्कार करने से पहले गिनती तो कर लेते। उसने कहा कि वो इसी शहर का रहने वाला है।

मेरी आर्थिक स्थिति काफी कमजोर थी। महात्माओं ने कहा कि आप संगत में आया करो। दास बात मानकर संगत में आने लगा और अपनी सामर्थ्य अनुसार सेवा करने लगा। एक दिन महापुरुष ने कहा कि यह जमीन खाली पड़ी है, इसे खरीद लो। दास ने जैसे–तैसे वह जमीन खरीद ली। दास को उस जमीन से काफी फायदा हुआ। उसके बाद तो बहुत कुछ मिलता गया। अब प्रभु कृपा से किसी चीज की कमी नहीं है। सन्त जी, जब निरंकार–प्रभु मुझे बिना गिने सब कुछ दे रहा है तो फिर मैं भी सेवा करते समय गिनती क्यों करू?

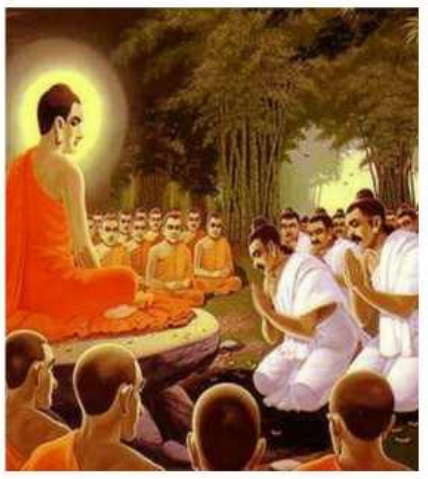

दिव्यांग, अनाथ, असहाय एवं वंचितजन की सेवा में सतत सक्रिय संस्थान के विभिन्न सेवा प्रकल्पों में करें सहयोग

कृपया अपने परिजनों या स्वयं के जन्मदिन, शादी की वर्षगांठ पुण्यतिथि को बनायें यादगार..

जन्मजात पोलियो ग्रस्त दिव्यांगों के ऑपरेशनार्थ सहयोग राशि

ऑपरेशन संख्या	सहयोग राशि	ऑपरेशन संख्या	सहयोग राशि
501 ऑपरेशन के लिए	17,00,000	40 ऑपरेशन के लिए	1,51,000
401 ऑपरेशन के लिए	14,01,000	13 ऑपरेशन के लिए	52,500
301 ऑपरेशन के लिए	10,51,000	5 ऑपरेशन के लिए	21,000
201 ऑपरेशन के लिए	07,11,000	3 ऑपरेशन के लिए	13,000
101 ऑपरेशन के लिए	03,61,000	1 ऑपरेशन के लिए	5000

निर्धन एवं दिव्यांगों को खिलाएं निवाला

आजीवन भोजन/नाश्ता सहयोग मित्ति

(वर्ष में एक दिवस 50 दिव्यांग, निर्धन एवं अनाथ बच्चों के लिए भोजन/नाश्ता सहयोग हेतु मदद करें)

नाश्ता एवं दोनों समय भोजन सहयोग राशि	37000/-
दोनों समय के भोजन की सहयोग राशि	30000/-
एक समय के भोजन की सहयोग राशि	15000/-
नाश्ता सहयोग राशि	7000/-

दुर्घटनाग्रस्त एवं जन्मजात दिव्यांगों को दें कृत्रिम हाथ-पैर और सहायक उपकरणों का उपहार

वस्तु	सहयोग राशि (एक नग)	सहयोग राशि (तीन नग)	सहयोग राशि (पाँच नग)	सहयोग राशि (ग्यारह नग)
तिपहिया साईकिल	5000	15,000	25,000	55,000
व्हील चेयर	4000	12,000	20,000	44,000
केलीपर	2000	6,000	10,000	22,000
वैशाखी	500	1,500	2,500	5,500
कृत्रिम हाथ/पैर	5100	15,300	25,500	56,100

गरीब दिव्यांगों को बनाएं आत्मनिर्भर

मोबाइल /कम्प्यूटर/सिलाई/मेहन्दी प्रशिक्षण सौजन्य राशि

1 प्रशिक्षणार्थी सहयोग राशि- 7,500	3 प्रशिक्षणार्थी सहयोग राशि -22,500
5 प्रशिक्षणार्थी सहयोग राशि- 37,500	10 प्रशिक्षणार्थी सहयोग राशि -75,000
20 प्रशिक्षणार्थी सहयोग राशि- 1,50,000	30 प्रशिक्षणार्थी सहयोग राशि -2,25,000

सेवा - स्मृति के क्षण

सम्पादकीय

ईश्वर की आराधना के अनेकानेक स्वरूप प्रचलन में है। इनमें एक है जरूरतमंदों की उपयुक्त सेवा। सेवा शब्द यों तो इतना व्यापक है कि प्रत्येक क्रियाकलाप को इसके अंतर्गत परिभाषित किया जा सकता है। परन्तु सेवा का एक प्रभावी रूप है किसी भी जरूरतमंद की सहायता जो उसे तत्काल आवश्यक है।

आज अनेक व्यक्ति अज्ञान पीड़ित हैं, कई लोग रोजगार विहीन हैं, कई स्वास्थ्य से पीड़ित हैं तो कई अन्य परिस्थितियों से। इनमें भी जो रोग से, दिव्यांगता से, निर्धनता से पीड़ित हैं उनको तो तुरंत सहयोग चाहिए ही । इस प्रकार के सहयोग के लिए वर्तमान में अनेक संस्थान, अनेक संगठन व अनेक व्यक्ति सेवारत हैं। यह सही है कि पीड़ितों की तुलना में सेवा करने वालों की संख्या अत्यधिक न्यून है, पर बहुत कुछ हो रहा है। इस प्रकार के सेवा कार्यों में प्रमुखतः संसाधनों का भी प्रमुख सहयोग होता है। लेकिन साधनों से भी ज्यादा महत्व है– सेवा के लिए अंतरमन से उठे भावों का। हर एक व्यक्ति के मन में यदि सेवा की भावना जग जाए तो संसाधन तो स्वतः जुटने लगते है। प्राथमिक कार्य है सेवा के विचारों का प्रसारण। जरूरी है सेवा के बीजों का रोपण। यह कार्य किसी वैचारिक अभियान से ही संभव है।

कुछ काव्यमय

सेवा श्रद्धा और समर्पण,
करते देखे श्रवणकुमार।
वर्षो तक बिन सोये सेवा,
कर जाते है लखन कुमार।
हनुमान की सेवा तो है,
सेवा में सबसे सिरमौर।
इनसे ही तो टिका रहा है,
यह सुंदर सेवा संसार।।

अपनों से अपनी बात

मानव सेवा ही माधव सेवा

किसी गांव के समीप एक संन्यासी का आश्रम था। उसे गांव वालों से जो कुछ भी भिक्षा मिलती, उससे वह भोजन बनाता था और अपने लिए थोड़ा भोजन रखकर बाकी भोजन भिखारियों में बाँट देता। एक दिन कुछ देवताओं ने संन्यासी के दर्शन दिए और कहा– तुम सच्चे संन्यासी हो। हम तुम्हें एक बीज देते हैं, इसे मिट्टी में दबा देना। इसके पौधे से पुष्प उगने पर तुम्हें पैसों की कमी नहीं रहेगी। यह कहकर देवता अंतर्धान हो गए। सन्यासी ने आश्रम के बगीचे में बीज बो दिया। कुछ दिनों के बाद एक पौधा उग आया। धीरे –धीरे पौधा बढ़ता गया। एक दिन उस पर पुष्प खिल उठा। वह पुष्प, सामान्य पुष्प नहीं, स्वर्ण पुष्प था। प्रतिदिन एक पुष्प खिलता, संन्यासी उससे प्राप्त धन से भिखारियों को भोजन कराता।

संन्यासी ने कुछ दिनों पश्चात् पंचतीर्थ दर्शन करने का निश्चय किया। उसका एक शिष्य था नरेश। संन्यासी ने

स्वर्ण –पुष्प के विषय में नरेश को बताया और पंचतीर्थ दर्शन को चला गया। कुछ दिन तक ठीक चलता रहा। भिखारी खुशी–खुशी भोजन करते रहे। धीरे–धीरे नरेश के मन में कपट आ गया। वह स्वयं को आश्रम का स्वामी मानने लगा। वह भिखारियों को भला–बुरा कहने लगा। भिखारियों को भोजन भी न देता। नरेश ने तय किया कि संन्यासी के लौटने के पूर्व, वह सारा धन समेटकर आश्रम से भाग जाएगा।

सुबह उसने देखा कि स्वर्ण –पुष्प खिला ही नहीं। पौधा भी सूख गया है। नरेश बड़ी कठिनाई से कुछ दिन बिता पाया। धन समाप्त हो गया। उसे भूखा रहना पड़ा। कभी–कभी ही भोजन मिलता। चार माह के बाद संन्यासी लौटा तो नरेश ने प्रणाम करते हुए कहा– गुरुजी अब स्वर्ण पुष्प नहीं खिलता।

संन्यासी ने पूछा– स्वर्ण–पुष्प क्यों नहीं खिलता?

मालूम नहीं गुरुजी–नरेश बोला।

संन्यासी को देखकर भिखारियों की भीड़ जमा हो गई थी। उन्होने नरेश की शिकायत संन्यासी से की। नरेश की दृष्टि नीचे झुक गई। संन्यासी ने कहा–देवताओं की .पा से यह पौधा मुझे मिला था, परन्तु तुम्हारे अनुचित व्यवहार के कारण स्वर्ण–पुष्प खिलना बंद हो गया। फिर संन्यासी ने भिखारियों से कहा–तुम कल आना मैं तुम्हें भोजन दूँगा। यह सुनकर भिखारी चले गए। अगले दिन जब संन्यासी उठा तो उसने देखा कि वह पौधा फिर खड़ा हो गया। उसमें स्वर्ण पुष्प खिल उठा है। तुम दरिद्र नारायण का आदर करना सीखो। यदि नर की सेवा करोगे, तभी नारायण प्रसन्न होंगे। मानव सेवा ही माधव सेवा है वत्स। **–कैलाश 'मानव'**

अनोखा कर्मचारी

बात 1947 की है। लेस्टर वण्डरमेन नाम का एक व्यक्ति मेक्सवेल सेकिम एण्ड कम्पनी में काम करता था। यह एक विज्ञापन एजेन्सी थी। एक दिन एजेन्सी के मालिक को लगा कि कम्पनी के मुनाफे का अधिकांश हिस्सा तो कर्मचारियों में ही चला जाता है, अगर वह कर्मचारियों की छंटनी कर देगा तो निश्चित ही उसे अधिक फायदा होगा। अपनी योजनानुसार उसने कई कर्मचारियों को निकाल दिया, लेस्टर वण्डरमेन भी उनमें से एक थे।

नौकरी से निकाले जाने के बाद भी वह एजेन्सी में आकर काम करते रहे। दूसरे कर्मचारी अक्सर उनसे कहते – जब तुम्हें यहाँ से निकाल दिया गया है तो फिर, यहाँ काम क्यों कर रहे हो?

"मैं यहाँ बिना तनख्वाह के काम कर रहा हूँ। मुझे लगता है कि मैं इस विज्ञापन एजेन्सी के मालिक से बहुत कुछ सीख सकता हूँ।" वण्डरमेन ने उत्तर दिया।

एजेन्सी के मालिक वण्डरमेन को देखकर भी नजरअंदाज करते रहे। उन्होंने एक महीने तक वण्डरमेन को अनदेखा किया एवं तनख्वाह भी नहीं दी, लेकिन वण्डरमेन ने फिर भी हार नहीं मानी और वे काम करते रहे।

एक दिन हार कर कम्पनी के मालिक वण्डरमेन के पास गए और बोले –मैंने पहले कभी ऐसा व्यक्ति नहीं देखा, जिसे काम तनख्वाह से ज्यादा प्रिय हो। वण्डरमेन ने वहीं पर काम करके विज्ञापन की अनेकों बारीकियों को सीखा। जब उन्हें वहाँ काम करते–करते बहुत समय बीत गया तो, उन्होंने अपनी समझ और अपने तरीके से विज्ञापन बनाने शुरू कर दिए। इसके पश्चात् वह विज्ञापन की दुनिया में इस कदर छा गए कि उन्हें इस क्षेत्र में सदी का सबसे सफल व्यक्ति माना गया। आज भी लोग उन्हें 'Father of Direct Marketing' के रूप में जानते हैं। अतः हम सभी को शुरूआती असफलता के बावजूद मेहनत, लगन, आस्था और विवेक के काम करना होगा, क्योंकि सफलता अवश्य मिलेगी।

–सेवक प्रशान्त भैया

एक सेवाभावी मानव की जीवनी

(वरिष्ठ पत्रकार श्री सुरेश जी गोयल द्वारा लिखित-झीनी-झीनी रोशनी से)

इन कार्यों के साथ शराब पीने की बुरी लत छोड़ने का संकल्प कराने का कार्य भी निरन्तर जारी था। ग्रामवासियों की यह बात प्रशंसनीय थी कि वे कभी झूठी शपथ नहीं लेते थे। उन्हें अपने आराध्य, अपने धर्म का डर था। किसी की शराब छोड़ने की हिम्मत नहीं थी तो वह मना कर देता पर झूठी शपथ कभी नहीं लेता। जो संकल्प ले लेते, वे उसे पूरा भी करते, फिर कभी शराब के हाथ तक नहीं लगाते। इसके भी अच्छे परिणाम निकले। कई लोगों ने शपथ ली और इस बुरी लत से छुटकारा पाया। इस हेतु कैलाश सदैव अपने साथ गंगा जल रखता। जो शराब छोड़ने को तत्पर हो जाता, उसके हाथों में गंगाजल देकर उससे बुलवाता–मैं भैरूजी बावजी की सौगन्ध खाता हूं कि अब शराब नहीं पीउंगा, नहीं पीउंगा, नहीं पीउंगा। यह वचन ये लोग निभाते। कैलाश सौगन्ध खाने वालों के बारे में बाद में पता लगता तो यह जानकर खुश होता कि सभी अपनी शपथ पर कायम हैं। तेल, शक्कर, दूध व कपड़ों के साथ साथ मफत काका अब ट्रक भर कर बाजरा भी भेजने लगे। बाजरे की ट्रक तो आ गई पर इसे खाली कराने की कहीं जगह नहीं थी। ट्रक वाला तुरंत खाली कराने की जिद कर रहा था वरना बाजरे सहित वापस लौट जाने की धमकी दे रहा था। सभी बदहवास होकर इधर उधर जगह तलाशने लगे मगर कहीं ऐसी खाली जगह नहीं मिली। एक बड़ा सा मकान जरूर था जो काफी दिनों से खाली पड़ा था। कोई नहीं रहता था, मकान पर ताला जड़ा था। पता लगाया तो अस्पताल में डॉ. एन.एस. कोठारी, मेडिकल ज्यूरिस्ट थे, उनके साले का यह मकान था। डॉ. कोठारी का फोन नम्बर पता लगाया व उनके घर फोन किया तो उनकी पत्नी ने फोन उठाया। इधर से कमला ने बात की, उन्हें सारी बात बताई और कहा कि आपके भाई साहब का मकान खाली पड़ा है, आप अनुमति दें तो ट्रक उसमें खाली करा लें। अपनी लाचारी व्यक्त करते हुए कहा कि उनके पास तो चाबी नहीं है। कमला ने कहा कि हम वापस नया ताला लगवा देंगे नहीं तो आई हुई ट्रक वापस चली जायगी। वे उदारमना थी, कमला को उन्होंने अनुमति दे दी। ताला तोड़कर मकान खोला तो काफी जगह थी, ट्रक शीघ्रता से खाली करवा कर ड्राइवर से देरी के लिए क्षमा मांगी और उसे रवाना किया।

गांव के नौजवानों को रोजगारोन्मुख प्रशिक्षण उपलब्ध कराने की योजना, कैलाश के मन में काफी समय से चल रही थी। इन युवकों को सुथारी काम सीखाने हेतु उसने अपने ऑफिस से खाली खोखे खरीद लिये थे। खोखे ऑफिस में ही पड़े थे, इन्हें भी लाकर बाजरे के साथ उसी मकान में रख दिये। कैलाश अपनी जीवन संगिनी कमला के उसके हर कार्य में कन्धा से कन्धा मिलाकर समर्पित भाव से सहयोग करने से धन्य था। वह सौभाग्यशाली था कि उसे ऐसी पत्नी मिली, वरना सेवा का इतना बड़ा प्रकल्प स्थापित कर पाना संभव नहीं होता। जब बाजरे की ट्रक खाली कराने कराने की समस्या उत्पन्न हुई तो कमला का उत्साह देखते ही बनता था। जीवन में पहली बार वह किसी के साथ साईकिल के पीछे बैठी और जगह तलाशने निकली थी।

अंश - 120

जिन्दगी जीना सिखाया संस्थान ने

मेरा नाम धमेन्द्र है जिला धौलपुर, राजस्थान से हूँ। मैं छोटा था तब मेरा पैर टेढ़ा हो गया। मतलब मेरे को चलने में प्रॉब्लम होती थी। तो फिर में नारायण सेवा संस्थान गया। वहां पर मैने ऑपरेशन करवाया, मैरा पेर सीधा हो गया। केलीपर लगा रखा ये। अब चलने में कोई दिक्कत नहीं है।

संस्थान में उसका निःशुल्क ऑपरेशन हुआ। अब धमेन्द्र आसानी से चलने लगा। वहां पर एक पैसा भी नहीं लगा। खाना– पीना– रहना नारायण सेवा संस्थान का था। यहीं पर उसने मोबाईल रिपेयरिंग का काम भी सीखा। और अपने लिये दो वक्त की रोटी का हूनर हमेशा के लिये पा लिया। वह कहता है– अब में जॉब कर रहा हूँ। आज मैं अच्छे से कमा सकता हूँ। मेरे को कोई दिक्कत नहीं हैं। सब लोग कमाते थे, मेरे पास कुछ भी मतलब काम करने के लिये ना तो कोई मुझे जॉब देता था। धमेन्द्र करता भी क्या? बचपन में टेढ़े हुए पैरों ने सिर्फ खिसकना सिखाया था। पर नारायण सेवा संस्थान ने उसे जिन्दगी जीना सिखाया। परिवार की खुशियां लौट आई। घरवाले भी मेरे से खुश है, धन्यवाद देता हूँ अपनी ओर से।

बीमार जीवनसाथी को मानसिक मजबूती भी दें

जीवनसाथी के बीमार होने के दौरान उन्हें सबसे अधिक जरूरत होती है भावनात्मक सहयोग की। ऐसी स्थिति में कुछ विशिश्ट तरीकों से उसकी बेहतर केयर कर पाएंगे, साथ ही बॉन्डिंग भी अच्छी होगी।

बीमारी की बात न हो

जीवनसाथी के साथ समय बिताने के दौरान उससे उसकी बीमारी के बारे में चर्चा न करें। अव्वल तो यह है कि उसका बीमारी से ध्यान डायवर्ट करने का प्रयास करें। गंभीर रोगों के मामले में उसे उन लोगों के उदाहरण दें, जो उनसे रिकवर कर चुके हैं। इसी आधार पर उसे प्रोत्साहित करें।

एक्सट्रा अटेंशन न दें

जीवनसाथी को अतिरिक्त केयर महसूस करवाना कई बार उसे यह महसूस करवाता है कि वह किसी गंभीर बीमारी से जूझ रहा है। इसके बजाय आम दिनों के समान व्यवहार करें, जिससे उसे बीमारी हल्की लगे।

निर्भर न बनाएं

अधिकांश अपने जीवनसाथी के बीमार होने पर लोग उसके काम भी खुद करने लगते हैं। इससे वह निर्भर बनने लगता है। यह तरीका सही नहीं है, बल्कि उसे अपने छोटे–मोटे कार्य खुद करने दें।

निराशा से बचें

देखभाल के दौरान अपनी मानसिक स्थिति को कमजोर न पड़ने दें, बल्कि खुद को मजबूत बनाएं रखें। जीवनसाथी को मोटिवेट करने के साथ ही उससे किसी नकारात्मक पहलू पर बातचीत नहीं करें।

(यह जानकारी विविध स्रोतों से प्राप्त है कृपया चिकित्सक से सलाह अवश्य लें।)

नारायण सेवा में मिले सेवा और प्यार

ख्यालीराम–बौद्धदेवा निवासी कनीगवा जिला बदायूँ (उ.प्र.) के खेतीहर साधारण परिवार का बेटा नरेशपाल (19) दोनों पॉव से लाचार था। करीब ढाई साल की उम्र में बुखार के दौरान लगे इंजेक्शन के बाद दोनों पाँव लगातार पतले होते चले गए। बिना सहारे के लिए उठना, बैठना और खड़ा रहना भी मुश्किल था। मथुरा में इलाज भी करवाया परन्तु हालत वही रही। नरेश ने बताया कि हरियाणा में उसके परिवार से सम्बद्ध व्यक्ति ने नारायण सेवा संस्थान, उदयपुर में पोलियो चिकित्सा की जानकारी दी जिसका इलाज भी यहीं हुआ था। नरेश के साथ आए उसके भाई अभय सिंह ने बताया कि ऑपरेशन हो चुका है। हम पूरी तरह संतुष्ट हैं। दुनियाभर में संस्थान का प्रचार होना चाहिए ताकि हम जैसे गरीब लोग भी इसका लाभ ले सकें। इसके संस्थापक पूज्य 'मानव सा.' के जुग–जुग जीने की प्रभु से कामना करते हैं।

आपश्री का सहयोग मिले : प्रार्थना

भारत के विभिन्न शहरों में 720 स्नेह मिलन
2026 के अंत तक 720 मिलन समारोह आयोजित करने का संकल्प

960 शिविरों द्वारा निःशुल्क जांच एवं उपचार
2026 के अंत तक 960 आर्टिफिशियल लिम्ब केम्प लगाये जायेंगे।

1200 नई शाखाएं
2026 के अंत तक 1200 नई शाखाएं खोलने का लक्ष्य।

120 कथाएं
2026 के अंत तक विभिन्न शहरों में 120 कथाएं आयोजित की जायेंगी।

वर्ल्ड ऑफ ह्यूमैनिटी
2026 के अंत तक वर्ल्ड ऑफ ह्यूमैनिटी का निर्माण पूर्ण होकर 10 हजार से अधिक लोग लाभान्वित होंगे।

नारायण सेवा केन्द्र
आगामी 5 वर्षों में संस्थान के वर्तमान में संचालित सभी केन्द्रों में रोजगारोन्मुखी प्रशिक्षण आरम्भ किये जायेंगे।

विदेश में सेवा प्रकल्पों का विस्तार

26 देशों में पंजीयन
वर्ष 2026 के अंत तक 26 देशों में संस्थान के पंजीकृत कार्यालय खोलने का लक्ष्य

6 से सेवा केन्द्र का शुभारम्भ
6 से अधिक देशों में केन्द्र स्थापित कर संस्थान सेवाओं को देगा विस्तार

20 हजार दिव्यांगों को लाभ
विदेश के 20 हजार से अधिक जरूरतमंद एवं रोगियों को लाभान्वित करने का होगा प्रयास

अनुभव अमृतम्

पी.जी. जैन साहब ने जीवन समर्पित कर दिया। पूज्य राजमल जी भाई साहब ने सेवा के प्रकाश को बता दिया। सेवा का प्रकाश हजारों कोटि–कोटि करोड़ों सोने से अधिक प्रकाश सेवा का राजमल जी भाई साहब ने बता दिया। चैनराज जी लोढ़ा साहब पिछली पंक्ति में उनके जीवन के उपहार कमाना फिर नारायण सेवा में सावन्तराज पोलियो हॉस्पिटल में पुण्य कमाना अदभुत जीवन बाबू भैया–लाला। ये जीवन कभी–कभी देह देवालय समाप्त होगा, खबर जाएगी, कैलाश जी चल बसे। सब चल बसते हैं। कोई अमर होके नहीं आया। अश्वथामा को अमर होने का वरदान मिला था, लेकिन कर्म अच्छे नहीं थे। भगवान श्रीकृष्ण ने कहा अर्जुन इसके ललाट से मणि निकाल लो, ये मणि तो समाज की निधि है। इसकी ललाट से निरंतर रक्त बहता रहेगा, गिरता रहेगा। ये भटकता रहेगा। इसने ब्रह्मास्त्र का संधान उत्तरा के गर्भ में किया है। ताकि पाँडवों का वंश ही मिट जावे। लेकिन भगवान सुदर्शन धारी श्रीकृष्ण चन्द्र भगवान सुदर्शन चक्र लेकर के उत्तरा के उदर में पहुँचे, और ब्रह्मास्त्र के प्रभाव को समाप्त किया। फिर परीक्षित का जन्म हुआ था। हमने परीक्षित जी को देखा नहीं। न हमने देखा है मंगला नाम को, धनाराम को, उदाराम को। कभी कहते हैं कहावत सुनी हैं भगवान भूखे उठाता भूखा सुलाता नहीं। परंतु हमने 3–3 दिन के भूखे बच्चों को देखा है। 3 दिन से जिनके उदर में दाना नहीं गया। एक कोर नहीं गया। देखा है बहुत घूमे हैं– आदिवासी क्षेत्रों में :–

जर्जर तन चिपक्या पेटांरा,
गाल खाल रा खाडा रे।
कठे अंगरख्या कठे पगरख्या,
आधा फिरे उगाड़ा रे।।

ये सच्ची घटनाएं है। कहानी नहीं है। समय के नक्षत्र में घटनाएं गठित होती चली गई। केवल प्रवचन नहीं। केवल भाषण नहीं। केवल प्रेरणा नहीं। केवल विचार नहीं। भूखे को भोजन, बीमार को दवा, निर्धन को वस्त्र, दोनों घुटनों से दोनों हाथों से चलने वाले चौपायों की तरह चलने वाले बच्चों को अपने पैरों पर चलाने की विद्या गतिमान होती रही।

सेवा ईश्वरीय उपहार– 473 (कैलाश 'मानव')

अपने बैंक खाते से संस्थान के बैंक खाते में जमा करें - अपना दान

आप अपना दान सहयोग नारायण सेवा संस्थान, उदयपुर के नाम से संस्थान के बैंक खातों में सीधे भी जमा करवाकर PAY IN SLIP भेजकर सूचित कर सकते हैं, जिससे दान प्राप्ति रसीद आपको भेजी जा सके।

संस्थान पेन कार्ड नम्बर AAATN4183F, टेन नम्बर JDHN01027F

Bank Name	Branch Address	RTGS/NEFT Code	Account
State Bank of India	H.M.Sector-4	SBIN0011406	31505501196
ICICI Bank	Madhuban	ICIC0000045	004501000829
Punjab National Bank	KalajiGoraji	PUNB0297300	2973000100029801
Union Bank of India	Udaipur Main	UBIN0531014	310102050000148

संस्थान को दिया गया दान-सहयोग आयकर अधिनियम 1961 की धारा 80G के अन्तर्गत 50 प्रतिशत नियमानुसार छूट के योग्य है।

मन के जीते जीत सदा (दैनिक समाचार-पत्र) प्रकाशक : कैलाश चन्द्र अग्रवाल 483, सेवाधाम, सेवानगर, हिरण मगरी, से. 4, उदयपुर (राज.) स्वामित्व : नारायण सेवा संस्थान प्रकाशन स्थल : ई, डी-71 बप्पा रावल नगर, हि.म. सेक्टर-6, उदयपुर
मुद्रक : न्यूटेक ऑफसेट प्रिंटर्स, 13, भोपा मगरी, बी.एस.एन.एल. एक्सचेंज के पास, हिरण मगरी, सेक्टर - 3 उदयपुर (राज.) के लिए नारायण प्रिंटिंग प्रेस, सेवा महातीर्थ, लियो का गुडा, उदयपुर
सम्पादक : लक्ष्मीलाल गाडरी, मो. +91-294-6622222,+91-7023509999 • ई-मेल : mankijeet2015@gmail.com • आरएनआई नं. : RAJHIN/2014/59353, • डाक पंजी सं. : RJ/UD/29-154/2021-2023